ISSN: 2348-1390
Impact Factor: 4.321 (IIJIF)

35.

पब्लिक स्फियर और मीडिया

डॉ चित्र□ली.
सहायक प्रोफ़ेसर
अहिंसा एवं शान्ति अध्ययन विभाग
म,.वि.वि.हिं.अं.गां.वर्धा

प्रिंट क्रांति ने अपने प्रतिरोधी स्वरुप के चलते जो सत्ता पर काबिज जन थे उनसे उनके अधिकारों को छिना और आम जन तक उस ज्ञान का प्रचार प्रसार किया जिससे वह अब तक अछूता था। राजा रवि वर्मा ने इसी प्रिंट क्रांति के बदौलत ही मंदिरों में कैद ईश्वर को शूद्रों (अछूतों) की झोपड़ियों तक पहुंचाया। जिस ईश्वर को देखना भी अछूतों के लिए पाप समझा जाता था वह आज उसको देख और स्पर्श कर सकता था। ये परिवर्तन प्रिंट क्रांति के द्वारा ही संभव हो पाया।

मीड़िया तकनीकी के स्वरुपो में बदलाव आने से भी सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन हुए वे अलग किस्म के थे।र हुआवीं सदी में प्रेस का विस्ता 19 वीं और 18 ,हुआ निक मीड़िया का उदयवीं में अलेक्ट्रा 20 की का ि□जिटल तकनीवीं सदी के अंत में न्यू 20 और।

ि□जिटल तकनीकी के विकास के साथ ही सोशल मीड़िया सक्रिय हुआ जिसक 2-स्वरुपों के माध्यम से प्रतिरोध के स्वर या कहें प्रतिरोध के तरीके में भी परिवर्तन दिखाई देने लगा।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि जहाँ पले इंटरनेट को सिर्फ शहरों तक ही पहूँचने वाला माध्यम माना जाता था, वही अब इसकी उम्मीद से ज्यादा पहुंच बताती है कि काफी लोग इस चुअक्र)लआभासी रुप संसार से (जु□चुके हैं और लगातार जुड़ते ही जा रहे है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत के कई मंत्री और मंत्रालय अब ट्विटर से प्राय; महत्वपूर्ण चीजों को जारी करते है और कई बार जो वह जारी करते हैं वह अगले दिन के समाचारपत्रों की पहली खबर बनती है। अब तो चुनावी अनियान भी इंटरनेट और सोशल वेबसाइटों के जरिए संपन्न किए जा रहे हैं। इससे हमें मीड़िया तकनीकी के बदलने के साथ उसके आकार प्रकार और उसकी पहुंच के बारे में एक बदलाव की सूचना मिलती है।

मीड़िया की शक्ल पहले कलम और स्थाही तक ही सीमिल थी, लेकिन दिल्ली के एशियाड़ खेलों के बाद टेलीविजन ने भी अपना बेहद महत्वपूर्ण और निर्णायक स्थान बनाया।

मीड़िया तकनीकी जिस तरह से बदल रहीं थी उसके साथसाथ पब्लिक स्फियर में भी बदलाव हो रहा - था। इस पब्लिक स्फियर के बदलने को जर्गन हैबरमासने अपनी पुस्तक 'द स्ट्रक्चरल ट्रांसफार्मेशन ऑफ पब्लिक स्फियर' (1989 रणअंग्रेजी संस्क) में बेहतर ढंग से व्याख्यायित किया है। इस अध्ययनके अनुसार 17 वी सदी के समय प्रेसका अविर्भाव निजी विचारों को स 18 वी और◌ार्वजनिक करने के रुप में था, इसने सामाजिक और राजनैतिक घटनाओं के संबंध में तार्किक आलोचना के रास्ते को खोला और सरकारी आलोचना को विस्तार दिया। हैबरमास के अनुसार यही वह समय था जब खुला पब्लिक स्फियर अस्तित्व में आया था।

इलेक्ट्रानिक मीड़िया के उदय के साथ परफारमेंश अब ज्यादा सार्वजनिक जगह में प्रदर्शित नहीं होता था यह अब पब्लिक से निजी स्फियर की और मुड़ गया था। अन्य शब्दों में 'प्रत्यक्ष आडियंश' को तकनीकी ने प्रतिस्थापित कर दिया था अब आडियंश न ही भौतिक स्पेस का उपयोग करते थे और न ही अक्सर सार्वजनिक स्थानों में कार्य को अंजाम देते थे (2007 और लांगरस्टएबरकोम्बी)अब अक्सर वे अपने घरों के निजी स्फियर में ही बातचीत करते थे।

हबरमास मानते है कि पब्लिक स्फियर और तार्किक आलोचनात्मक वादने में थे उन्होंविवाद जो अस्तित्व-घटकरबंद दरवाजों के बीच टेलीविजन के सामने तक सिमटकर रह गय। यह नये तरह का तरह के ऑडियंश का।

यह टेलीविजन का ही प्रभाव या बेहतर कहें तो प्रकोप था कि बड़ी हस्तियो ने स्टिंग आपरेशनों के जरिए बहुत कुछ कमाया और बहुत कुछ गंवाया। रातोंरात लोग स्टार और सेलिब्रिटी बन गए या रातोंरात सेलिब्रिटी से उतरकर कटघरे में खड़े हो गए। चौबीसों घंटे अहर्निश चलने वाले टेलिविजन के खबरिया चैनलों ने यह कहते हुए जमकर वाहवाही बटोरी कि हमारी पहुंच अखबारों से कई गुना ज्यादा है क्योंकि अखबार पढ़ने ने लिए पाठक को साक्षर होने की जरुरी होती है जबकि हम तो गरै पढ़े लिखे लोगों तक भी-'समाचारों को पहुंचाते है और सिर्फ पहुंचाते ही नहीं, जो चाहते हैं और जसैा चाहते है वह और वसैा पहुंचाकर ही दम लेते है

मीड़िया ने पब्लिक स्फियर का रुपांतरण किया ताकि यह बड़े सामुदाय के लिए उपलब्ध हो परंतु इसने अपना राजनतैिक चरित्र खो दिया । चनैलों में जिनकी पूंजी लगी हुई है, आमतौर पर उन्हीं के खिलाफ वाजिब खबरें बनती है, ऐसा कई पत्रकारों से निजी और अनौपचारिक बातचीत से साफ पता लगता है पर जिसके खिलाफ लिखना या प्रसारित करना है, जब उन्हीं के अपने न्यूज चनैल हैं, तब फिर पब्लिक स्फीयर का दायरा अनिवार्य रुप से सिकुड़ जाने को अभिशप्त है इसे ही हबरमास पुनः सामंतीकरण कह रहे थे । जॉन कीन निकरमास के कथन पुनः सामंतीकरण की आलोचना की और इलेक्ट्राने हब (2000) मीड़िया विभिन्त तरह के जटिल मोजेक का विकास है जो पब्लिक स्फियर के साथ अंतर्गथितहै और ओवरलेपिंग है

जॉन कीन ने तीन तरह के पब्लिक स्फियर को विषेशीकृत किया । माइक्रो मक्रो-मीसो-। माइक्रो पब्लिक स्फियर बॉटम अप परिप्रेक्ष्य को अभिव्यक्त करता है यह स्थानीय स्तर की जगह है जहां नागरिक विवादों में शामिल होते है यह वसैा ही स्थान है जिसे हबरमास व्याख्यायित करते है डिस्कशन सर्किल, पब्लिशिंग हाउस, चर्च, क्लीनिक कफै । बातचीत के ये रुप अक्सर अदृश्य होते है और कभीकभी सार्वजनिक रुप से भी -होतदृश्य े है मीसोनिक मीड़िया और के रुप में प्रकट होते हैं जो इलेक्ट्रा राज्यमीसो पब्लिक स्फियर राष्ट्र-अखबारों के बड़े पमैाने पर वितरण से मीडियेटेड होते है और मक्रो पब्लिक स्फियर ग्लोबल स्तर पर बनते हैं उन्हें औद्योगिक संबंध के रुप में चिन्हित कर सकते हैं जो राष्ट्र राज्य की सीमाओं को क्रॉस करते है या सटैलाइट लिंक संचार व्यवस्था के रुप में होते है

नये डिजीटल मीड़िया के आने से न्यू डिजिटल मीड़िया की लोकतांत्रिक एवं प्रतिरोध क्षमता इस्तेमाल करने का रास्ता मिला। इंटरनेट डिजीटल मन्यू)ीड़िया लिक प्रतिक्रिया की सुविधा हुईके आने से तात्का (, छोटे हित समूहों की संभावनाएं अपने को अभिव्यक्त करने की बढ़ी है अन्ना मेलिना के शब्दों में I.C.T. के उदय जिसे तेलीमेटिक्स भी कहते हैं ने पदानुक्रम के विमर्श को कम करने में तत्परता दिखाई है डिजीटल मीड़िया तकनीक ने पब्लिक स्फियर के निर्माणमें सहयोग किया है और साइबर स्पेस ने व्यक्तिगत और उनके एक जसैे हितों भौगोलिक और भौतिक दूरी के बीच सक्रिय संचार उपलब्ध कराया है बॉलीवुड के महानायक अभिताभ बच्च्न ने हाल ही मे अपने ब्लॉग पर लिखा है कि आईइंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ) .आई.ए.एम.ए . ने मुझे सोशल मीड़िया पर्सन ऑफ दि इयर से भारत में सोशल मीड़िया का एक संघ है और उन्हों (इंडिया

नित किया है और यह समय है कि में अपसम्माने बढ़े हुए परिवार को इसके लिए सम्मानित करू आपकी ही वजह से मुझे यह सम्मान मिला है।

मीड़िया के इन बदलाओंको सकारात्मक कह सकते है लेकिन इसके साथ मीड़िया में जो बदलाव या परिवर्तन हो रहे है वह कई सवालो को जन्म दे रहे है जिनमें से प्रमुख हैमीड़ -िया में कॉरपोरेट का वर्चस्व या फिर नारी का वस्तुकरण।

मीड़िया मे महिलाओं को एक 'वस्तु' के रुप में पेश किए जाने की आलोचना करते हुए केंद्रीय मंत्री निर्मला सीतारमण ने स्व नियमन की जरुरत बताई और हितधारकों से आग्रह किया है कि वे अपनी-'पसंद की स्वतंत्रता' का उपयोग विवेक के साथ करें। उन्होंने कहा ''आप कुछ विषयों को बढ़ावा दे रह हैं, कुछ तरह की कहानी और महिलाओं का चित्रण, जिसमें उसे एक वस्तु एक पायदान के रुप में पेश किया जाता है, और आप बहुत सहज होकर उसे देखते हैं, आंसू बहाते है जैसे ही सरका --------र हस्तक्षेप का प्रयास करती है, शिकायत शुरु हो जाती है 'ओह, मॉरल पोलिसिंग।''

चिपको आंदोलन जैसी गतिविधियों और राजनीति में महिलाओं की भूमिका को रेखांकित करते हुए मंत्री ने कहा, ऐसे बहुत से उदाहरण हैं जिनसे बताया जा सकता है कि महिला की क्या सकारात्मक भूमिका हो सकती है। इसके लिए उन्होंने दर्शकों की मानसिकता बदलने की भी जरुरत बताई।

उन्होंने कहा, '' हम दिखावा नहीं करें । यह सच है कि इसके लिए (महिलाओं को वस्तु के रुप में पेश करने दर्शक मौजूद हैं (। मैं नहीं कह रही कि इसका मतलब यह है कि इसे चलने देना चाहिए । लेकिन अगर हम लगातार सरकार से शिकायत कर रहे हैं कि वह क्या कर रही है तो एक मिनट के लिए पूछना चाहूंगी कि हम उनके लिए क्या कर रहे हैं जो इन्हें देख रहे हैं।''

वास्तव में यह न्युज चैनलों द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले उस तर्क के संदर्भ में कहा गया है जहाँ पर चैनल कहते हैं कि हम तो वही दिखाते हैं जिसे देखना दर्शक पसंद करता है।

बहरहाल ये मीड़िया के परिवर्तन और उसकी नैतिकता का सवाल है। लेकिन जब हम सोशल मीड़िया के पब्लिक स्फीयर को देखते है तो वह बहुत ही बड़े दायरे में फैला हुआ प्रतीत होता है जिसमें अभिव्यक्ति की पूरी स्वतंत्रता रहती है लेकिन जब फेशबुक, व्हाटस एवं, ट्रवीटर, ब्लाग पर कोई सरकार विरोधी या धर्म विरोधी कोई बात तर्क संगत प्रस्तुत की जाती है तो एक पूरी लांबी उसका विरोध करती है। और उस व्यक्ति विशेष के प्रति लामबंद हो जाती है। सोशल मीड़िया ने प्रतिरोध के लिए एक नये स्पेस की जगह तैयार की जिसका यूजरस इस्तेमाल कर रहे थे लेकिन उनके इस प्रतिरोध या कहे अभिव्यक्तिकी इस स्वतंत्रता का भी कहीं न कहीं दमन किया जा रहा है। इस स्वतंत्रता का कुछ लोग गलत इस्तेमाल भी कर रहे है। जिन्हे यह जानकारी ही नहीं है कि सोशल मीड़िया में कई तरह के अलगमाल गलत अलग संगठनों ने अपने वर्ग को टारगेट कर के उनका इस्ते- प्रसार के लिए कर रहे है-प्रचार।

सोशल मीड़िया का स्फीयर मेक्रो स्फीयर है लेकिन इस मेक्रो पब्लिक स्फीयर में भी कई संगठन अपनी गतिविधियों से इसे प्रभावित किए बिना नहीं मान रहे है। इसी सोशल मीड़िया ने अण्णा के आंदोलन को सफल बनाया था।

संदर्भः

- हाब्सबाम एरिकः एज ऑफ एक्स्ट्रीम, अनुवादप्रकाश दीक्षित संवाद प्रकाशन-, 2009।
- (संपाविसरका द्र यूजेलक एंडअलेक्सें (., द चेंजिंग डायनामिक्स, इंस्टीट्यूट फॅार इंटरनेशनल रिलेशंस,जग्रोड कोएशिया 2008।

- हैबरमॉस जर्गन, 'द स्ट्रेक्चरल ट्रांसफार्मेशन ऑफ पब्लिक स्फियर', कैम्ब्रिज, एम.ए ., एम □ई □1989 प्रेस .
- कीन जानः स्ट्रक्चरल ट्रांसफार्मेशन ऑफ द पब्लिक स्फियर' इन हैकर, केएंड डीजेके .एल ., जेसंपादकः डिजि□म .
री एंड प्रैक्टि□सेस ऑफ थ्योडेमोक्रेसीः इश्यू, लंदन सेज 2000।
- थाम्पसन, बीत्र जानः 'द थ्योरी ऑफ द पब्लिक स्फिय' इन बायडबेरे□, ओलिवर एंड न्यू बोल्ड, क्रिस एप्रोचेस □(.संपा)
मीड़िया, ए रीडर लंदन, अरनॉल्ड,1995 , पृष्ठ 252
- सोवेन इसाक, नेक्ड प्रो□से□एंड द पालिटि□क्स ऑफ पर्सनलिज्म, सराय रीडर बेयर एक्□2005बारकर, □र (2001)
'द मोरल बाथ ऑफ बॉडिली अनकान्षसनेसः फीमेल न्यूडिज्म, बॉडिली एक्सपोजर एंड द गेज कं□नुअमः जर्नल ऑफ
मीड़िया एंड कल्चरल स्□डीज,15,3,303 317-

❑❑❑